भारत में जीरॉक्स का परचम

ए. वेंकटनारायण

अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेज प्रबंधन कंपनी जीरॉक्स ने 1983 में मोदी समूह की कंपनियों के साथ साझेदारी के रास्ते भारत में प्रवेश किया था। यह साझा उद्यम 1995 तक चला और इसने भारतीय बाजार में अपनी जड़ें जमा लीं। अमेरिका के एंड्रयू होर्न वर्ष 2004 से भारत में कंपनी के प्रबंध निदेशक हैं। वह कहते हैं, ''अपने भाग्य का पूरा नियंत्रण अब हमारे हाथ में है।''

जीरॉक्स के मोनो प्रिंटर, कलर प्रिंटर तथा बहुउद्देश्यीय मशीनों सहित 35 से भी अधिक उत्पाद हैं। चौदह क्षेत्रीय कार्यालयों का नेटवर्क है और इसके लगभग 140 साझेदार सिर्फ जीरॉक्स उत्पाद बेचते हैं। कंपनी के नए ऑफिस ग्रुप डिविजन के कार्यकारी निदेशक नतेश मनी का कहना है कि कंपनी ने देश भर में सक्षम सेवा प्रदान करने के लिए समुचित व्यवस्था की है और आशा है कि आगामी कुछ वर्षों में ब्रिकी में बहुत बढ़ोतरी होगी- विशेष रूप से छोटे और मध्यम क्षेत्र में जहां कंपनी जीरॉक्स को एक ऐसे ब्रांड के रूप में पेश करना चाहती है जो फोटो कॉपी मशीन बेचने वाली कंपनी से आगे दिखाई पड़े।

जीरॉक्स कार्पोरेशन ने कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारियां निभाकर काफी सद्भावना अर्जित की है। कंपनी ने वर्ष 2004 में सुनामी आपदा और दक्षिण एशिया में आए भूकंप तथा अमेरिका में तूफान की विनाशलीला के दौरान मानवता की सेवा के लिए धन और सामग्री के रूप में खुले हाथों से मदद दी। वर्ष 2005 में उत्तरी भारत तथा पाकिस्तान में आए भूकंप के बाद राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने भूकंप से हुई तबाही और पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाने का अनुमान लगाने के लिए अमेरिकी कार्पोरेट संस्थानों का जो दल भेजा, उसमें जीरॉक्स के प्रतिनिधि भी शामिल थे। भारत में जीरॉक्स कंपनी ने स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, चिकित्सा, परिवार कल्याण और रामपुर (उत्तर प्रदेश) तथा आसपास के गांवों में सड़कों तथा स्कूलों से संबंधित बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी परियोजनाओं के लिए 14 लाख रुपए से अधिक खर्च किए हैं। रामपुर में कंपनी की एक फैक्टरी है। ग्रामीण मेधावी बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के विचार से कंपनी ने वर्ष 1995 में छात्रवृत्तियां देना शुरू किया। □

हेमंत भट्टनागर

एंड्रू होर्न: जीरॉक्स इंडिया के प्रबंध निदेशक

ट्रेडमार्क जो जुबां पर छाए

-दीपांजली काकाती

एक ऐसा शब्द, संकेत, डिजाइन या इन सबका मिला-जुला रूप है ट्रेडमार्क जिसका किसी उत्पाद या सेवा के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके कारण बाजार में कोई भी उत्पाद दूसरे उत्पादों से अलग पहचाना जाता है। ट्रेडमार्क को केवल उसका मालिक ही किसी उत्पाद पर लगा सकता है। अगर ट्रेडमार्क बहुत लोकप्रिय हो जाए तो वह उसी प्रकार के उत्पादों या सेवाओं की पहचान भी बन जाता है। 'एस्कैलेटर' शब्द 1950 तक ओटिस एलिवेटर कंपनी का ट्रेडमार्क था लेकिन अमेरिकी पेटेंट कार्यालय ने आदेश दिया कि यह सार्वजनिक अधिकार क्षेत्र में है। इसलिए यह स्वचालित सीढ़ियों का सामान्य नाम बन गया। यहां कुछ नाम दिए जा रहे हैं जो ट्रेडमार्क कानून के अंतर्गत इनके स्वत्वाधिकारी की संपत्ति हैं:

क्लीनेक्स: यह किंबर्ली-क्लार्क कॉर्पोरेशन का पंजीकृत ट्रेडमार्क है जो 1890 के दशक से टिश्यू कारोबार में है। इन्होंने 1924 में पहली बार चेहरे को साफ करने वाला टिश्यू बाजार में उतारा।

डिक्टाफोन: ''डिक्टाफोन'' ट्रेडमार्क कोलंबिया ग्रामोफोन मैन्युफैक्चरिंग कंपनी ने 1907 में पंजीकृत कराया था। बाद में वह आवाज रिकॉर्ड करने के उपकरणों की अग्रणी कंपनी बन गई। 1923 में डिक्टाफोन कॉर्पोरेशन के नाम से अलग कंपनी बन गई। कई मालिकों की संपत्ति बनने के बाद 2006 में नुएंस कम्युनिकेसंस ने इसके अधिकार प्राप्त कर लिए। यह अमेरिका के उन सबसे पुराने ब्रांडों में से एक है जो आज भी चल रहे हैं।

टेफ्लॉन: यह नाम सामान्यत: नॉन स्टिक बर्तनों की कोटिंग के लिए इस्तेमाल किया जाता है। डुपों के रॉय जे. प्लंकेट ने 1938 में पॉलिटेट्राफ्लुओरोइथाइलीन की खोज की थी। टेफ्लॉन इसी का ब्रांड नाम है। इस ट्रेडमार्क के अधिकार 1945 में प्राप्त किए गए और शुरू में इसका उपयोग सेना ने तोप के गोलों में किया।

वैसलीन: पेट्रोलियम जैली के इस ब्रांड की खोज रॉबर्ट ऑगस्टस चेसेब्रॉ ने 1859 में की थी। वर्ष 1874 में मूल कंपनी को चेसेब्रॉ मैन्युफैक्चरिंग कंपनी में मिला लिया गया और 1877 में इस ब्रांड नाम का ट्रेडमार्क के रूप में पंजीकरण किया गया।

स्कॉच टेप: इस ट्रेडमार्क के चिपकने वाले टेप का विकास 1930 के दशक में रिचर्ड ड्रयू ने किया और इसका उत्पादन 3एम कंपनी करती है। कंपनी के पास स्कॉच पारदर्शी टेप के अलावा विभिन्न प्रकार के 80 अन्य टेप भी हैं जैसे स्कॉच रग एंड कार्पेट टेप, स्कॉच पेंटर्स मास्किंग टेप, स्कॉच हेयर सेट टेप, स्कॉच फ्रीजर टेप।

पोस्ट-इट नोट: सामान्यत: पीले रंग की स्टेशनरी पर पुन: उपयोग करने लायक चिपकने वाली यह पट्टी 3एम का ट्रेडमार्क है। इस प्रौद्योगिकी का विकास सबसे पहले 3एम के शोधकर्ता स्पेंस सिल्वर ने 1968 में किया। तब वह चिपकाने वाले उत्पाद एक्रीलेट में सुधार लाने की कोशिश कर रहे थे। उनके सहयोगी आर्ट फ्राई ने पोस्ट-इट नोट का विचार सुझाया क्योंकि उसके चर्च के भजनों की किताब में से बुकमार्क बार-बार गिर जाते थे और उसे उन पर गोंद लगाना पड़ता था।

बबल रैप: प्लास्टिक की पारदर्शी पैकिंग सामग्री जिसमें हवा के बुलबुले होते हैं। यह सील्ड एयर कॉर्पोरेशन का ट्रेडमार्क है। इसका आविष्कार एल्फ्रेड फील्डिंग तथा मार्क चवानीज ने 1960 में किया। शुरू में इसका विकास विशेष प्रकार के वालपेपर के रूप में किया गया था।

बैंड-एड: जॉनसन एंड जॉनसन का ट्रेडमार्क है। इस चिपकने वाले टेप का विकास 1920 के दशक में अर्ले डिकंसन ने किया था जो कंपनी में रूई की खरीद करते थे और बाद में इसके उपाध्यक्ष बने। डिकंसन ने पहली बार बैंड-एड का प्रोटोटाइप अपनी पत्नी जोसेफीन के लिए बनाया था जिसके हाथों में खाना बनाते समय अक्सर चाकू से घाव हो जाते थे।

स्क्रैबल: इस लोकप्रिय वर्ड-गेम का आविष्कार एल्फ्रेड मोशेर बट्स ने किया था जो 1948 में ट्रेडमार्क बना। अमेरिका में आज इस पर हैसब्रो इंकार्पोरेशन का अधिकार है। □